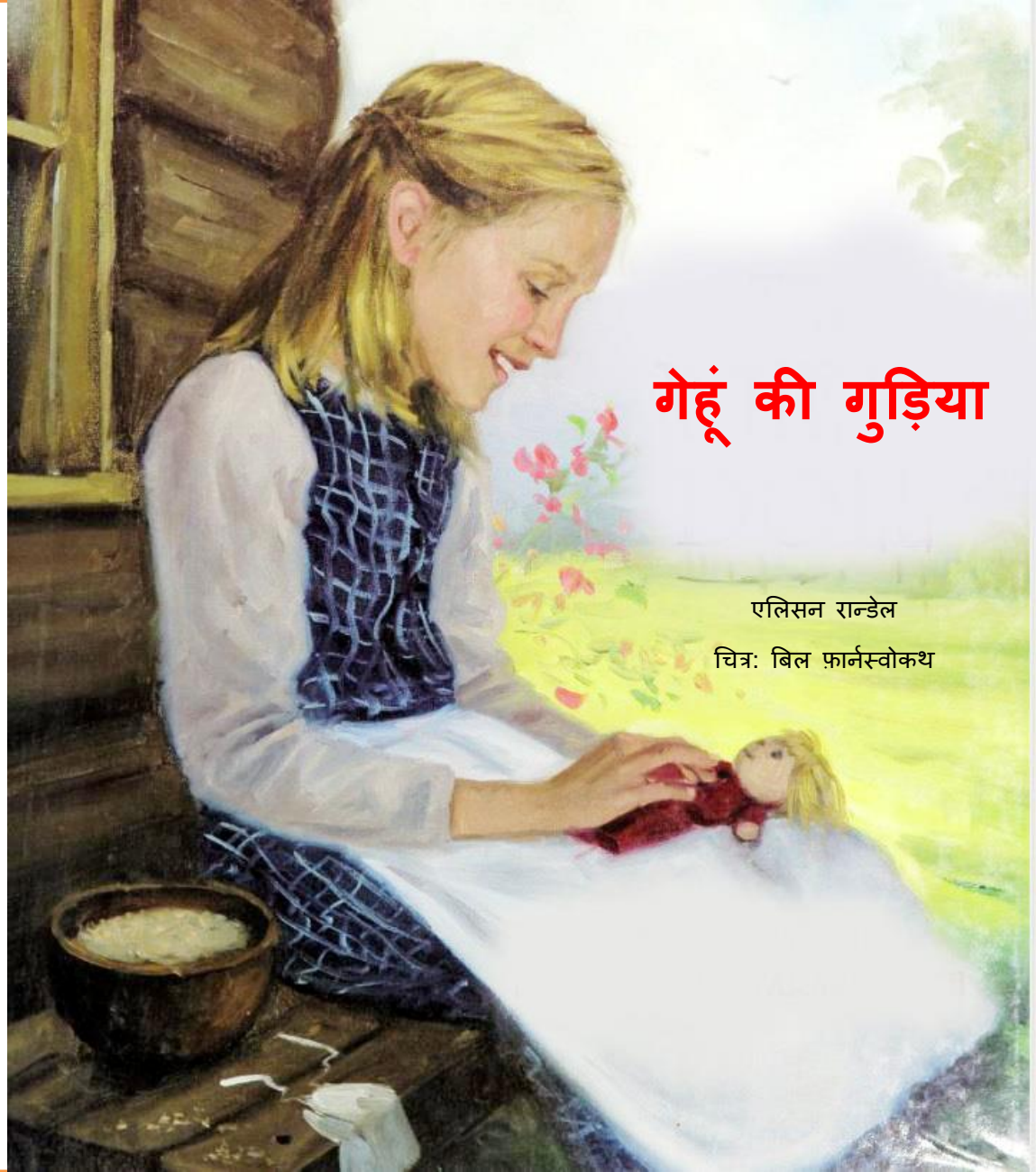
गेहूं की गुड़िया
एलिसन रान्डेल
चित्र: बिल फ़ार्नस्वोकथ

मैरी-एन, यूटाह के ऊबड़-खाबड़ इलाके में रहती थी. वो अपने दैनिक काम करती थी. वो सब्जी के बगीचे की देखभाल करती थीं और चिथड़ों के गलीचें बनाती थी. उसकी सबसे अच्छी दोस्त उनकी प्यारी घर की बनी गुड़िया, बेट्टी थी. उसकी गुड़िया का शरीर गेहूँ से भरा था. उसकी आँखें कभी नहीं झपकती थीं. लेकिन मैरी-एन हमेशा बेट्टी पर भरोसा कर सकती थी. बेट्टी, मैरी एन की बातों को सुनती थी और उसके रहस्यों को सुरक्षित रखती थी.

एक दिन एक भयंकर तूफान आया. मैरी-एन के परिवार को अपने केबिन में शरण लेनी पड़ी. मैरी-एन को अपनी गुड़िया को बगीचे से निकालने का वक्त ही नहीं मिला. जब हवा और बारिश कम हुई, तो मैरी-ऐन, बेट्टी को खोजने के लिए बाहर गई. लेकिन उसे उसकी गुड़िया बेट्टी कहीं नहीं मिली. साल बीत गया, लेकिन मैरी-एन ने अपनी गुड़िया की खोज करना नहीं छोड़ी. अंत में, जब सर्दी वसंत में बदली, तब मैन एन एक आश्चर्यजनक खोज की.

गेहूं की गुड़िया

एलिसन रान्डेल

चित्र: बिल फ़ार्नस्वोकथ

घाटी में गर्मी थी. मैरी-एन ने अपना माथा पोंछा और फिर एक गाजर की चोटी पकड़कर खींची. लेकिन गाजर ने अभी भी जमीन से हिलने से इनकार किया.

"इसमें तो बहुत समय लगेगा बेट्टी," मैरी-एन ने आह भरी.

बेट्टी ने जवाब नहीं दिया. बेट्टी कभी भी जवाब नहीं देती थी. बेट्टी ने अब तक केवल एक ही आवाज की थी. उसके गेहूं से भरे शरीर से दानों के हिलने की आवाज़ आती थी. पर मैरी-एन को पता था कि उसकी गुड़िया बेट्टी उसकी बात सुन रही थी.

"माफ़ करो बेट्टी, मुझे गाजर के लिए और जगह चाहिए," मैरी-एन ने कहा. फिर उसने अपने एप्रन की जेब से गुड़िया खींची और उसे बगीचे के पास एक पेड़ के ठूंठ पर रख दिया. वहां पर बेट्टी सीधी और स्थिर बैठी रही. उसकी कढ़ाई वाली आँखें कभी भी झपकतीं नहीं थीं, लेकिन मैरी-एन जानती थी कि बेट्टी ध्यान दे रही थी.

फिर बेट्टी ने देखा कि मैरी-एन, गाजर की क्यारी में से गुज़री और उसने एक-एक करके सभी गाजरों को बाहर खींचकर निकाला.

अंत में, जब मैन-एन की जेबें भर गईं, तो उसने अपने एप्रन को कसकर इकट्ठा किया और गाजर रखने के तहखाने की ओर चल पड़ी.

उसने पहाड़ों पर फैल रहे काले बादलों, ओर तेज़ हवा पर ध्यान नहीं दिया.

जैसे ही मैरी-एन ने तहखाने के ठंडे अंधेरे में गाजर खाली कीं, उसकी माँ ने उसे केबिन में बुलाया.

"मैरी-एन, जल्दी करो! आओ और इन दरारों को भरने में मेरी मदद करो." फिर उन्होंने अपनी बेटी को चिथड़ों एक बंडल सौंप दिया.

"लेकिन, माँ," मैरी एन को अपनी गुड़िया बेट्टी की याद आई.

"नहीं, बेटी अब तुम बाहर नहीं जा सकतीं," उसकी माँ ने दृढ़ता से कहा. "बाहर बहुत तेज़ तूफान चल रहा है."

जल्दी से, मैरी-एन ने पुराने कपड़ों को छोटे टुकड़ों में फाड़ा. उसने उन्हें अपने केबिन के लट्ठों के बीच भरने की कोशिश की. जिस झिरी से भी थोड़ा सा प्रकाश अंदर आता था उसने उसे भरा. दरारों में भरे चिथड़े, तूफान की धूल और नमी को दूर रखेंगे.

हवा का एक तेज झोंका घाटी के पार गया. वो बगीचे के बीच से गुज़रा और मकई के पौधों पर फट पड़ा. उससे बेचारी बेट्टी सीधे पेड़ के ठूंठ से गिरी और उसका सिर एक पत्थर से टकराया. फिर वो नीचे एक चट्टानी छेद में गिर गई.

वापस केबिन में, मैरी-एन ने दरारें भरना समाप्त किया. लेकिन इससे पहले कि वह बगीचे की ओर दौड़ पाती, पापा ने हवा के एक और झोंके के साथ दरवाजा खोला. अब बाहर दिन का आकाश, रात जैसा स्याह हो गया था.

"यह तूफान एकदम भयंकर है," उन्होंने कहा.

"धत्तेरे की!" मैरी-एन रोई. "मेरी बेट्टी बगीचे में बाहर है!"

"पर अब तुम उसकी तलाश करने नहीं जा सकती हो," पापा ने कहा.

"मुझे वो करना ही होगा," मैरी-एन ने जोर देकर कहा, लेकिन माँ की पतली, मजबूत भुजाओं ने उसे थपथपाया.

"तुम ऐसा कुछ नहीं करोगी," उसने कहा.

बाहर, तेज़ बारिश से बेट्टी का शरीर भीगा गया था. उसके अंदर भरा गेहूँ फूलने लगा. अचानक, पहाड़ी से मिट्टी का एक टुकड़ा टूट गया और उसने मैरी-एन की गुड़िया को ढँक दिया. अब बेट्टी मिट्टी के नीचे फंस गई, और आँखों से ओझल हो गई.

ऐसा लग रहा था कि तूफान हमेशा के लिए चलता रहेगा. जैसे ही तूफ़ान समाप्त हुआ, मैरी-एन दरवाजे से बाहर निकली. बगीचा ऐसा लग रहा था मानो एक विशाल झाड़ू ने बगीचे की पूरी सफाई कर दी हो.

मैरी-एन उस पेड़ के ठूंठ की तरफ भागी जहां उसने बेट्टी को छोड़ा था.

लेकिन उसकी सबसे अच्छी दोस्त कहीं तो चली गई थी!

मैरी-एन ने हर जगह खोज की - ठूंठ के पीछे, मकई के पौधों के नीचे, और पहाड़ी के नीचे.

"बेट्टी!" वो घबराकर, बार-बार चिल्लाई. "तुम कहाँ हो?"

मैरी-एन ऊपर-नीचे की क्यारियों में से चली. वो अपनी गुड़िया को बुला रही ही और चिल्ला रही थी उसकी आँखें, आँसुओं से धुंधली हो गईं थीं. इससे पहले कि वो कुछ समझ पाती, रात ढलने लगी थी.

उसे बेट्टी कहीं नहीं मिली.

तभी मैरी-एन की ओर एक लालटेन आई. वो उसके पापा थे. वो अँधेरे में आए और वो अपनी बेटी को अपनी चौड़ी, गर्म बाँहों में उठाकर ले गए.

"देखो यह अंदर रहने का समय है," उन्होंने कहा.

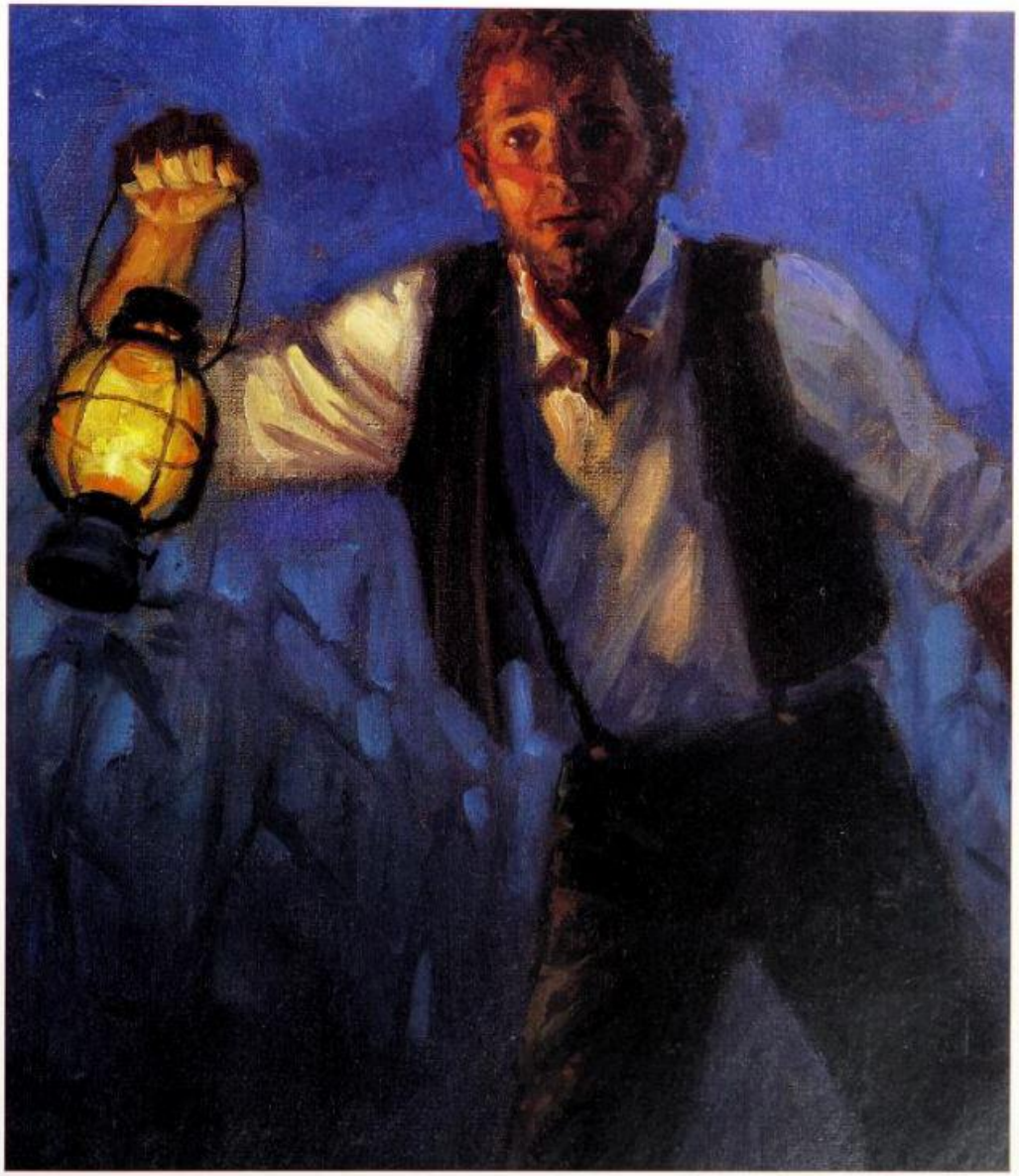

दिन और महीने बीत गए, लेकिन मैरी-एन ने बेट्टी की तलाश कभी नहीं छोड़ी. अपनी सबसे अच्छी मित्र के बिना उसे सर्दियाँ बहुत लंबी लग रही थीं. उसे अपनी गुड़िया के गेहूँ के शरीर से निकलने वाली आवाज़ याद आती थी, और उसे अपने एप्रन की जेब खाली महसूस होती थी. वैसे मैरी-एन को करने के लिए तमाम काम थे. जब वो मोमबत्तियां बना रही होती या कालीन बुन रही होती तो बेट्टी जैसा कोई पास बैठकर उसे देखने वाला कोई नहीं था,

जब मैरी एन कढ़ाई करती तो उसे बेट्टी की साटन सिलाई की आँखें, चेन सिलाई मुँह, और गुड़िया के कान याद आते थे.

जब वह स्कूल के घर जाती, तो रास्ते में दूसरी लड़कियों की बकबक सुनकर उसे अपनी दोस्त गुड़िया की याद आती थी जिस पर वो हमेशा अपने रहस्यों को सहेज कर रखने का भरोसा कर सकती थी.

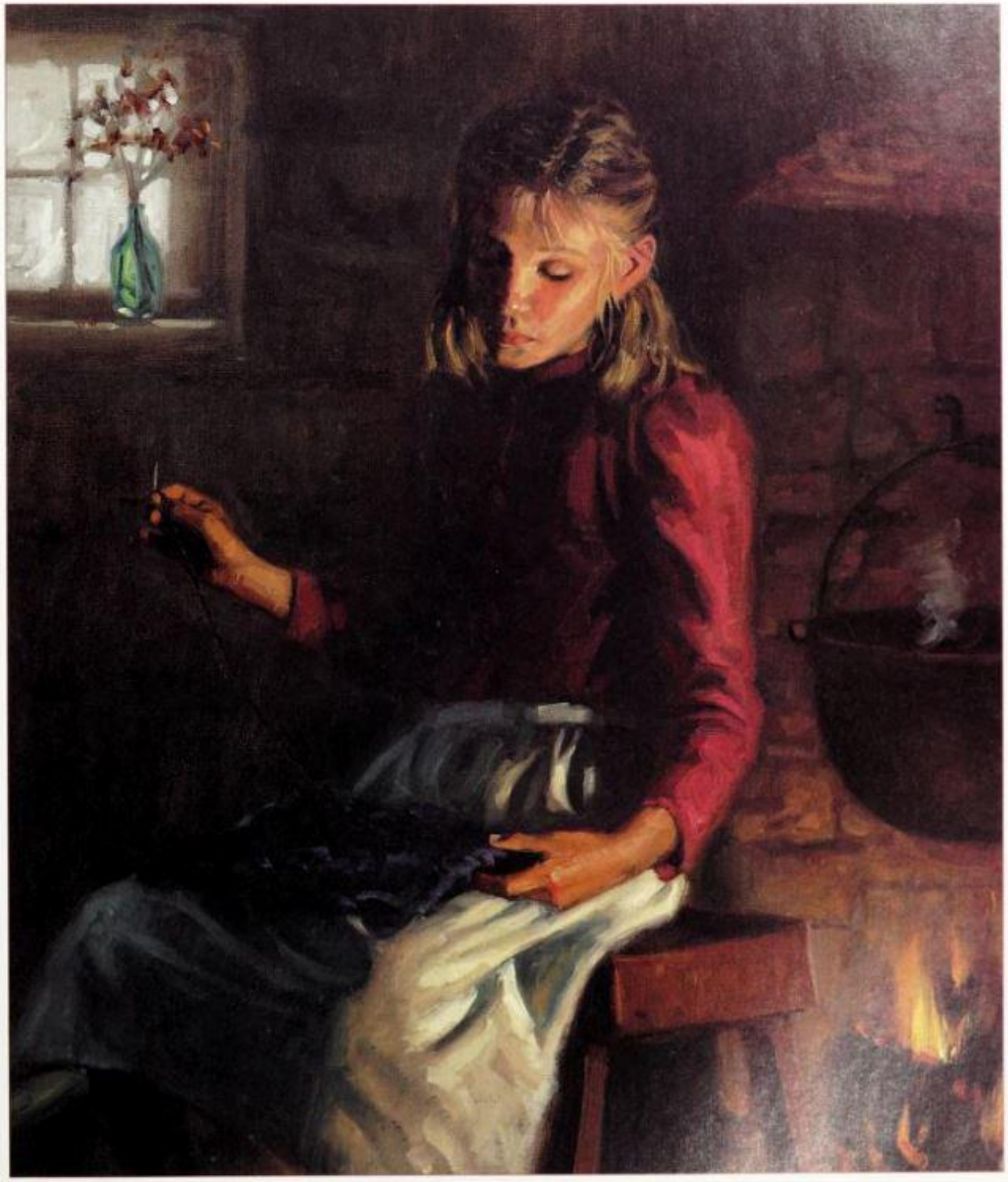

अंत में, लंबी सर्दी के मौसम के बाद वसंत आया. मैरी-एन ने एक टोकरी उठाई और वो बगीचे की ओर चल पड़ी. यह रोपण का मौसम था, गाजर के छोटे बीजों को उनकी क्यारियों में बोने का समय था. वो चाहती थी कि बेट्टी वहां हो और वो पौधों के कल्लों को ज़मीन से निकलते हुए देखे.

मैरी-एन ने बेट्टी के बारे में न सोचने की बहुत कोशिश की. वो उसी ठूंठ के पास खड़ी हुई और उसने ताजी वसंत की हवा में एक गहरी सांस ली.

तभी उसने देखा कि पहाड़ी की तलहटी की कीचड़ में कुछ हरी और नुकीली चीज उग रही थीं. वो ठूंठ से कूदी और उसे देखने के लिए ढलान से नीचे भागी.

कीचड़ का एक छोटा सा टुकड़ा अंकुरित हो गया था. उस टुकड़े का एक अजीब सा आकार था. उस टुकड़े के दो हाथ, दो पैर और एक सिर था. वो क्या हो सकता था...?

मैरी-एन ने कोमल घास के पार अपनी उँगलियों को दौड़ाया. "बेट्टी?" वो फुसफुसाई. "अच्छा, वो तुम हो?"

कोमल पतली पत्तियां उसके स्पर्श से आहें भरती प्रतीत हो रही थीं. अब मैरी-एन जानती थी कि बेट्टी उसकी बातें सुन रही होगी.

पूरी गर्मियों भर मैरी-एन ने गेहूं के उस टुकड़े की सेवा की. अंत में वो हरे रंग के अंकुर लंबे हुए और सोने के रंग में बदल गए. उसने गेहूं की बालियां काटीं. फिर वो सिलाई के काम में लग गई. उसने बेट्टी की नई आँखों और कानों पर विशेष ध्यान दिया.

मैरी-एन के पास बेट्टी को बताने के लिए बहुत कुछ था, और वो जानती थी कि उसकी सहेली उसकी बातें सुन रही होगी.

मैरी-एन के बारे में

1800 के दशक के अंत में, यूटाह के क्षेत्र में, मैरी-एन विंटर्स नाम की एक युवा लड़की ने अपनी गेहूं की गुड़िया खो दी. फ्रंटियर के बच्चों के पास फैंसी खिलौने नहीं होते थे. लड़कियां को अपनी गुड़िए जो सामान उपलब्ध होता था, उसी से ही बनानी पड़ती थीं. बेट्टी गुड़िया, कपड़े के स्क्रैप से बनाई गई थी और अक्सर ऐसी गुड़ियों में भूसा, लकड़ी का बुरादा, रुई आदि भरी जाती थी. मैरी-एन ने अपनी गुड़िया में गेहूं भरा, क्योंकि उसका परिवार अपने खेत में वही उगाता था.

मुझे यह नहीं पता कि मैरी-एन विंटर की गुड़िया का असली नाम क्या था और वो कैसे खोई. मुझे यह भी नहीं पता कि मैरी-एन ने बाद में एक नई गुड़िया बनाई या नहीं. हालाँकि, मुझे पता यह है कि वो अगले वसंत तक अपनी प्यारी गुड़िया को नहीं भूली और जब उसने अपनी गुड़िया को नए गेहूँ के टुकड़े के रूप में बढ़ते हुए पाया तो उसे बड़ी ख़ुशी हुई. मुझे यह जानकारी कैसे मिली? क्योंकि मैरी-एन ने अपने बच्चों को उसके बारे में बताया था. और फिर उसके बच्चों ने अपने बच्चों को बताया. और अंत में मैरी-एन के वंशज ने वो कहानी मुझे सुनाई.